om 24 final Delhi_Page 1 and 2 18/03/2015 10:54 Page 9

कथा सरिता

आदर्श निर्लोभी

परम भक्त तुलाधार शूद्र बड़े ही सत्यवादी, वैराग्यवान तथा निर्लोभी थे। उनके पास कुछ भी संग्रह नहीं था। तुलाधारजी के कपड़ों में एक धोती थी और एक गमछा। दोनों ही बिल्कुल फट गये थे। मैले तो थे ही। वे नाममात्र के वस्त्र रह गये थे, उनसे वस्त्र की ज़रूरत पूरी नहीं होती थी। तुलाधार नित्य नदी में नहाने जाते थे।

इसलिए एक दिन भगवान ने दो बढ़िया वस्त्र नदी के तीरे पर ऐसी जगह रख दिये, जहाँ तुलाधार की नज़र उनपर गये बिना न रहे। तुलाधार नित्य के नियमानुसार नहाने गये। उनकी नज़र नये वस्त्रों पर पड़ी। वहाँ उनका कोई भी मालिक नहीं था, परंतु उनके मन में ज़रा भी लोभ पैदा नहीं हुआ। उन्होंने दूसरे की वस्तु समझकर उधर से सहज ही नज़र फिरा ली और स्नान-ध्यान करके चलते बने। दूर छिपकर खड़े हुए प्रभु, भक्त का संयम देखकर मुस्करा दिये।

दूसरे दिन भगवान ने गुलर के फल जैसी सोने की डली उस जगह रख दी। तुलाधार आये, उनकी नज़र आज भी सोने की डली पर गयी। क्षणभर के लिए अपनी दीनता का ध्यान आया, परंतु उन्होंने सोचा यदि मैं इसे ग्रहण कर लूंगा तो मेरा अलोभ-व्रत अभी नष्ट हो जायेगा। फिर इससे अहंकार पैदा होगा। लाभ से लोभ, फिर लोभ से लाभ, फिर लाभ से लोभ-इस प्रकार निन्यानवे के चक्कर में पड़ जाऊंगा। लोभी मनुष्य को कभी शान्ति नहीं मिलती। नरक का दरवाज़ा तो सदा उनके लिए खुला ही रहता है। बड़े-बड़े पापों की पैदाइश इस लोभ से ही होती है। घर में धन की प्रचुरता होने से स्त्री और बालक धन के मतवाले हो जायेंगे, मतवालेपन से कामविकार पैदा होता है और कामविकार से बुद्धि मारी जाती है। बुद्धि नष्ट होते ही मोह छा जाता है और उस मोह से नया-नया अहंकार, क्रोध और लोभ उत्पन्न होता है।

इनसे तप नष्ट हो जाता है और मनुष्य की बुरी गति हो जाती है। अतएव मैं इस सोने की डली को किसी प्रकार भी नहीं लूंगा। इस प्रकार विचार करके तुलाधार उसे वहीं पड़ी छोड़कर घर की ओर चल दिये।

भाग्य और कर्म

हिमालय के पर्वतीय प्रदेश में एक राजा राज करता था। एक दिन राजा शिकार खेलने के लिए गया। एक खरगोश झाड़ियों से निकला। राजा ने उसका पीछा किया, किंतु अचानक वह खरगोश चीते में बदल गया और शीघ्र ही दृष्टि से ओझल हो गया। इस आश्चर्यजनक घटना से स्तंभित हुए राजा ने पंडितों की सभा बुलाई और उनसे इसका अर्थ पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, 'इसका अर्थ यह है कि जिस स्थान पर चीता दृष्टि से ओझल हुआ था, वहाँ आपको एक नया शहर बसाना चाहिए,क्योंकि चीते केवल उसी स्थान से भाग जाते हैं, जहाँ मनुष्यों को एक बड़ी संख्या में बसना हो।' राजा को सपने का शुभ फल जानकर बहुत खुशी हुई। नया शहर बसाने के लिए मजदूर काम पर लगा दिए गए। प्रजा भी सहयोग करने लगी। हंसी-खुशी काम शुरु हुआ। अंत में ज़मीन की कठोरता देखने के लिए एक स्थान पर उन्होंने लोहे की एक मोटी कील गाड़ी। उस समय अचानक पृथ्वी में एक हल्का सा कंपन हो उठा। खुद को ज्ञानी कहने वाले लोग चिल्ला पड़े, 'इसकी नोंक सर्पराज शेषनाग की देह में धंस गई है। अब यहाँ शहर नहीं बनाना चाहिए। यदि बनाया गया तो शहर पर कोई भारी विपत्ति आएगी और राजा का अपना वंश भी शीघ्र ही नष्ट हो जाएगा।' राजा बोला, 'हम यहाँ पर शहर बनाने का निश्चय कर चुके हैं, इसलिए आप इसका कोई उपाय बताएं, मैं सब करने को तैयार हूँ। शहर तो बनेगा ही।' राजा के दृढ़ निश्चय से ज्ञानी पिघले और राजा से कुछ उपाय करवाये। ज़मीन वहाँ की उपजाऊ थी और पानी भी खूब था। कहते हैं, कई सौ साल से एक खूबसूरत शहर उस पहाड़ पर बसा हुआ है और उसके चारो ओर फैले खेत बढ़िया फसल पैदा करते हैं।

कर्म और संकल्प के आगे भाग्य को भी हार माननी होती है।

आपका राज्य कहाँ तक है

महाराजा जनक के राज्य में एक ब्राह्मण रहता था। उससे एक बार कोई भारी अपराध हो गया। महाराजा जनक ने उसको अपराध के फलस्वरूप अपने राज्य से बाहर चले जाने की आज्ञा दी। इस आज्ञा को सुनकर एक ब्राह्मण ने जनक से पूछा-'महाराज! मुझे यह बतला दीजिए कि आपका राज्य कहाँ तक है?' क्योंकि तब मुझे आपके राज्य से निकल जाने का ठीक-ठाक ज्ञान हो सकेगा। महाराजा जनक स्वभावत: ही विरक्त तथा ब्रह्मज्ञान में प्रविष्ट रहते थे। ब्राह्मण के इस प्रश्न को सुनकर वे विचारने लगे तो पहले तो परंपरागत सम्पूर्ण पृथ्वी पर ही उन्हें अपना राज्य तथा अधिकार-सा दिखा। फिर मिथिला नगरी पर वह अधिकार दिखने लगा। आत्मज्ञान के झोंके में पुन: उनका अधिकार घटकर प्रजा पर, फिर अपने शरीर में आ गया और अन्त में कहीं भी उन्हें अपने अधिकार का भान नहीं हुआ। अन्त में उन्होंने ब्राह्मण को अपनी सारी स्थिति समझाई और कहा कि 'किसी वस्तु पर भी मेरा अधिकार नहीं है। अतएव आपकी जहाँ रहने की इच्छा हो, वहीं रहिये और जो इच्छा हो भोजन करिये।'

इस पर ब्राह्मण को आश्चर्य हुआ और उसने उनसे पूछा-'महाराज! आप इतने बड़े राज्य को अपने अधिकार में रखते हुए किस तरह सब वस्तुओं से निर्मम हो गये हैं और क्या समझकर सारी पृथ्वी पर अधिकार सोच रहे थे?

जनक ने कहा-'भगवन्! संसार के सब पदार्थ नश्वर हैं। शास्त्रानुसार न कोई अधिकारी ही सिद्ध होता है और न कोई अधिकार-योग्य वस्तु ही। अतएव मैं किसी वस्तु को अपनी कैसी समझूं? अब जिस बुद्धि से सारे विश्व पर अपना अधिकार समझता हूँ, उसे सुनिये! मैं अपने के लिए कुछ भी न कर देवता, पितर, भूत और अतिथि-सेवा के लिए करता हूँ। अतएव पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश और अपने मन पर भी मेरा अधिकार है।'

जनक के इन वचनों के साथ ही ब्राह्मण ने अपना चोला बदल दिया। उसका विग्रह दिव्य हो गया और बोला कि-'महाराज! मैं धर्म हूँ। आपकी परीक्षा के लिए ब्राह्मण वेष से आपके राज्य में रहा तथा यहाँ आया हूँ। अब भली-भाँति समझ गया कि आप सत्वगुणरूप नेमियुक्त ब्रह्मप्राप्तिरूप चक्र के संचालक हैं।'

सच्चा गुरु

एक बार संत उस्मान अपने शिष्य के साथ एक गली से निकल रहे थे कि किसी घर में से मालकिन ने राख से भरा बर्तन गली में उड़ेला। सारी राख संत उस्मान पर जा गिरी। संत ने बड़े सहज भाव से अपना सिर और कपड़े झाड़े और शांत भाव से हाथ जोड़कर बुदबुदाए-'हे दयामय ईश्वर! तुम्हें लाख-लाख धन्यवाद!' और वे आगे बढ़ गए।

साथ चल रहे शिष्य ने पूछा-'गुरुदेव! आपने परमात्मा को धन्यवाद क्यों दिया! राख से आपके कपड़े खराब करने की वजह से तो ईश्वर से आपको मकान-मालकिन की शिकायत करनी थी।'

संत उस्मान ने जवाब दिया-'तुम मेरे पूर्वजन्म के किए पापों के बारे में नहीं जानते हो। मैं तो आग में जलाए जाने योग्य हूँ और प्रभु ने तो राख से ही निर्वाह कर दिया, इसलिए इस कृपा के लिए ईश्वर को धन्यवाद क्यों नहीं दूं?' संत की बात सुनकर शिष्य को समझ में आ गया कि गुरु कष्ट सहन करके भी किसी को बुरा-भला कहने में भरोसा नहीं रखते हैं।

देहरादून। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि उत्पादन मंडी समिति के चेयरमैन रविन्द्र सिंह आनन्द, के.के. पाठक, ब्र.कु. प्रेमलता तथा ब्र.कु. मंजू।

पोखरा-नेपाल। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं एडमिनिस्ट्रेटिव ऑफिसर रामजी कोयराला, व्यवसायी रामचन्द्र थापा, शैलेष राज बराल, ब्र.कु. परिनीता, ब्र.कु.अप्सरा, ब्र.कु.पूनम, ब्र.कु.सुधा तथा सीनियर ब्यूटीशियन मीना गुरुंग।

कैलिफोर्निया। 'न्यूनेस इन 2015-हार्नेस द पावर ऑफ इन्टेशन' विषय पर आयोजित रिट्रीट के दौरान उपस्थित हैं ब्र.कु. हंसा, ब्र.कु. डोरोथी, जेसिका एस.ब्रेवमैन बर्क,डायरेक्टर,जेविस कम्युनिटी, रिलेशन्स काउंसिल तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

चण्डीगढ़। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. सारिका, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

दिल्ली-परमपुरी। 79वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव ध्वज फहराने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. उर्मिला,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सुदेश, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. नरेन्द्र तथा अन्य।

दिल्ली-राजीव नगर। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए विधायक वेद प्रकाश, ब्र.कु. वृन्दा, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. पूर्निमा तथा अन्य।

नोएडा-से.26। सड़क परिवहन चालकों के लिए आयोजित 'टेंशन फ्री लाइफ एंड राजयोगा मेडिटेशन' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुषमा।